"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Constitution of India."

The Motion was adopted.

SHRI CHITTA BASU : Sir, I introduce the Bill.

BANNING OF COMMUNAL PARTIES IN INDIA BILL*

SHRI G.S. NIHALSINGHWALA (Sangrur) : I beg to move for leave to introduce a Bill to provide for banning all communal parties functioning all over India.

MR. SPEAKER : The question is :

"That leave be granted to introduce a Bill to provide for banning all communal parties functioning all over India."

The Motion was adopted.

SHRI G.S. NIHALSINGHWALA : Sir, I introduce the Bill.

16.03 hrs.

RESERVATION OF VACANCIES IN POSTS AND SERVICES (FOR SCHEDULED CASTES AND SCHEDULED TRIBES) BILL—(Contd.)

MR. SPEAKER : Now we take up further consideration of the motion moved by Shri Surjan Bhan on 23 March, 1984, I may mention that the time already taken on this is 7 hours and 13 minutes as against the allotted time of 7 hours. On the last occasion, the mover was replying. He had already taken 27 minutes. He may take another 10 minutes to finish his reply. I hope, the House will agree to this.

*Published in Gazette of India Extra Ordinary Part II, Section 2 dated 27.7.1984.

श्री सूरजभान (अम्बाला) : अध्यक्ष महोदय, इस बिल पर जो चर्चा हुई है, उस में 26 सम्मानित सदस्यों ने हिस्सा लिया है। मैं सब का तहे-दिल से शुक्रिया अदा करता हूं। खास तौर पर मैं चौधरी सुन्दर सिंह, श्री राकेश, श्री पासवान, श्री जगपाल सिंह, श्री गंगवार, श्री गिरधारी लाल डोगरा, श्री अराकल, श्री राठौर, श्री राजेश कुमार सिंह, श्री सत्यनारायण जटिया, श्री व्यास और दूसरे साथियों का शुक्रिया अदा करता हूं। इनके साथ ही मुझे खास तौर से श्री एम० सी० डागा का शुक्रिया अदा करना है। वे एक ही व्यक्ति हैं, जिन्होंने इस बिल का विरोध किया।

16.04 hrs.

[SHRI R.S. SPARROW *in the Chair*]

बाकी सब ने इस बिल की हिमायत की है। डागा साहब ने जिन कारणों से विरोध किया, उन का जिक्र मैं बाद में करूंगा लेकिन एक बात मैं शुरू में कहना चाहता हूं कि इस बिल में कोई नई बात नहीं है। सरकार ने बहुत पहले से कुछ आर्डर जारी किये हुये हैं, आदेश दिये हुए हैं और उन्हीं को मैंने इस बिल में इनकारपोरेट किया है। यह एक किताब है, जिसे मैं कभी-कभी लाल किताब कहता हूं। यह बोशेर 370 पेजेज का है और इसमें सारे आदेश लिखे हुए हैं।

मैंने इस 370 पेज की किताब के बजाए 10 सफे का एक छोटा सा बिल आपके सामने पेश किया है। अगर यह बिल कानून की शक्ल ले ले तो हरिजनों और आदिवासियों के साथ जो साल-ब-साल ज्यादतियां हो रही हैं वे दूर हो जायें। स्वर्गीय बाबा साहेब डा. अम्बेडकर ने जो कुछ भी संविधान में लिखा था वह लिखा हुआ भी वगैर लिखा हुआ बन कर रह गया है। आज 37 सालों की आजादी के बाद भी मैं हरिजन और आदिवासियों के लिये यह कहने पर मजबूर हूं—